

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, द थियोलॉजी ऑफ़ ल्यूक-एक्ट्स, सत्र 7, जोएल ग्रीन, पर्पस थियोलॉजी।

यह ल्यूक-एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र 7 है, जोएल ग्रीन, पर्पस थियोलॉजी।

हम लुकान धर्मशास्त्र का अपना अध्ययन जारी रखते हैं, और आइए हम प्रभु की खोज करें।

पिता, हम आपके सामने झुकते हैं, पवित्र आत्मा की शक्ति से आपके पुत्र के माध्यम से आपकी उपस्थिति में आते हैं, और आपकी सहायता मांगते हैं। हम प्रार्थना करते हैं, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से, हममें और हमारे परिवारों में कार्य करें। तथास्तु।

जोएल ग्रीन, जो पहले एस्बरी थियोलॉजिकल सेमिनरी में न्यू टेस्टामेंट के प्रोफेसर थे, अब कैलिफोर्निया में फुलर थियोलॉजिकल सेमिनरी में एक्सजेक्टिकल थियोलॉजी या उसके जैसा कुछ, एक्सजेगिस और थियोलॉजी के प्रोफेसर हैं। उन्होंने 1997 में ल्यूक के न्यू टेस्टामेंट गॉस्पेल पर एक अद्भुत नई अंतर्राष्ट्रीय टिप्पणी की, और यह अपनी व्याख्या में ठोस है, लेकिन ल्यूक के संदेश, ल्यूक के गॉस्पेल के संदेश को समझने में हमारी मदद करने में समाजशास्त्र और बयानबाजी के उपयोग के लिए सबसे उल्लेखनीय है। अब, अधिनियम नहीं, बल्कि ल्यूक का सुसमाचार।

“ल्यूक की सामाजिक सेटिंग कुछ ऐसी है जिसके बारे में वह बहुत मददगार तरीके से बात करता है। यीशु के जन्म और बचपन की कहानी को पढ़ने के साथ, हम वास्तव में, ल्यूक-एक्ट्स की सामाजिक दुनिया में प्रवेश करते हैं, इसकी वास्तविकता की समझ, जिसमें अलौकिक की भूमिका, इसकी प्राथमिक संस्थाएं और उनकी भूमिका शामिल है। कार्य, इसकी सामाजिक गतिशीलता, इत्यादि।

हम स्वयं को कुछ ऐसे उद्देश्यों के प्रति सचेत कर सकते हैं जो ल्यूक की जन्म कथा की दुनिया में प्रमुख हैं। आरंभिक पद से, यह स्पष्ट है कि ल्यूक शक्ति संतुलन से चिंतित है। यहूदिया के राजा हेरोदेस, ल्यूक 1-5 के दिनों में कथा का उद्घाटन एक अस्पष्ट कालानुक्रमिक मार्कर से अधिक है, लेकिन इन घटनाओं को राजनीतिक तनाव के एक विशेष काल में रेखांकित करता है।

हेरोदेस मजबूत इदुमी विरोधी भावनाओं के बावजूद सत्ता में आया, यही उसकी पृष्ठभूमि, इदुमिया और यरूशलेम में यहूदी बुजुर्गों का प्रतिरोध है। उन्हें एक तरह से आधा यहूदी माना जाता था और उस तरह से उनका सम्मान नहीं किया जाता था। इसे, उसके शासनकाल से जुड़े समस्याग्रस्त आर्थिक और सांस्कृतिक मामलों के साथ, राजा हेरोदेस के दिनों की भाषा के किसी भी पढ़ने में शामिल किया जाना चाहिए।

यही बात जनगणना के बारे में भी कही जा सकती है, जिसका उल्लेख ल्यूक 2:7 में बार-बार किया गया है। रोमन साम्राज्य जिस समृद्धि और शांति के लिए जाना जाता है, वह आरंभिक

विजय और लूट के माध्यम से उत्पन्न हुई थी और विजित लोगों पर बाद में कर लगाकर बनाए रखी गई थी। 2:1 में सीज़र ऑगस्टस का स्पष्ट नामकरण भी दिलचस्प है और ऑक्टेवियन को संदर्भित करता है, जिसे प्राचीन काल में, उद्धरण, दिव्य उद्धारकर्ता, छोटे एस के रूप में मान्यता प्राप्त थी, जिसने दुनिया में शांति लाई है।

"इस संदर्भ में, यीशु को उद्धारकर्ता, प्रभु के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसके माध्यम से दुनिया में शांति आती है, यह शायद ही आकस्मिक हो सकता है। लूका 2:11 और 2:14। इसके अलावा, जकर्याह और मरियम से मिलने वाला स्वर्गदूत, गेब्रियल, अन्यत्र दुष्टों का नाश करने वाले के रूप में जाना जाता है, विशेष रूप से 1 हनोक 9 और 10 और 54 और श्लोक 6 के गैर-बाइबिल लेखन में। मरियम के बेटे के बारे में उसे बताया गया है कि उसके पास एक शाश्वत राज्य होगा, दाऊद का सिंहासन।

मैरी का गीत ईश्वर के उद्धार के शक्तिशाली कार्यों को सामाजिक-राजनीतिक उलटफेर के रूप में चित्रित करता है, जिसमें शक्तिशाली लोगों को उनके सिंहासन से नीचे लाया जाता है और निम्न लोगों को ऊपर उठाया जाता है। जकर्याह का गीत भविष्यवाणी करते हुए पलायन की छवियों का उपयोग करता है, उद्धरण, हम अपने दुश्मनों से कैसे बचेंगे। 171.

शिमोन और अन्ना, अपनी-अपनी भूमिका में, इज़राइल की सांत्वना और यरूशलेम की मुक्ति की आशा करते हैं, उनके मन में विदेशी कब्जे और अधीनता की समाप्ति, यहोवा के अधीन एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल का नवीनीकरण और सीज़र के अधीन नहीं होना चाहिए। युगांतशास्त्रीय प्रत्याशा को उसके असंख्य रूपों में याद करते हुए, मुख्य रूप से शांति और न्याय में शासन करने के लिए भगवान के आगमन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि कैसे ल्यूक 1:5 से 2:52 को सामाजिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि के खिलाफ भी पढ़ा जाना चाहिए। यह सच है क्योंकि भगवान के प्रत्याशित आगमन से राजनीतिक प्रभुत्व और सामाजिक उत्पीड़न का अंत हो जाएगा।

इसके अलावा, ल्यूक 1:68 और 2:38 में उल्लेखित ईश्वर की युगांतिक यात्रा दिव्य सहायता और मुक्ति के प्रकट होने का संकेत देती है। अंत में, मैरी, जकर्याह, शिमोन और अन्ना प्रत्येक भगवान के अंतिम समय के उद्धार की उम्मीद को अभिव्यक्ति देते हैं। इन तरीकों से, जन्म कथा युगांत संबंधी प्रत्याशा और इज़राइल की उसके हेरोडियन और रोमन अधिपतियों के अधीनता की समाप्ति के लिए स्पष्ट प्रभाव के साथ प्रबल है।

ल्यूक 1:5 से 2:52 में हमें जिस सामाजिक परिवेश से परिचित कराया गया है वह वह है जिसमें सामाजिक स्थिति और सामाजिक स्तरीकरण के मुद्दे सर्वोपरि हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि ल्यूक विशेष रूप से आर्थिक वर्ग से चिंतित है, उदाहरण के लिए, किसी की सापेक्ष आय या जीवन स्तर के कार्य के रूप में या उत्पादन के विषयों, उत्पादन के साधनों के साथ किसी के संबंध से संबंधित, जैसा कि मार्क्सवाद में है। उत्तर-औद्योगिक समाज के ऐसे मामलों का ग्रीको-रोमन पुरातनता में बहुत कम अर्थ है।

बल्कि, ल्यूक की सामाजिक दुनिया को शक्ति और विशेषाधिकार के इर्द-गिर्द परिभाषित किया गया था और इसे जटिल घटनाओं द्वारा मापा जाता है: धार्मिक शुद्धता, पारिवारिक विरासत, गैर-पुजारियों के लिए भूमि का स्वामित्व, व्यवसाय, जातीयता, लिंग, शिक्षा और उम्र। ये सभी चीजें शक्ति और विशेषाधिकार की निरंतरता का कारक हैं। शासक के पास सबसे अधिक शक्ति होती है और उसके पास सबसे अधिक विशेषाधिकार होते हैं।

उसके अधीन, शासक वर्ग समान स्तर तक नहीं, बल्कि सत्ता और विशेषाधिकार में महत्वपूर्ण रूप से भाग लेता है। और वहां से, यह उन पुजारियों के पास चला जाता है जिनके पास लोगों पर महत्वपूर्ण शक्ति और विशेषाधिकार होते हैं। इसी तरह, व्यापारी भी अमीर बन सकते हैं।

किसान एक बड़ा समूह हैं और मूल रूप से अपने अस्तित्व के लिए फ़िलिस्तीन के शासकों पर निर्भर हैं। कारीगर किसानों से ज्यादा बेहतर नहीं हैं, जो इस तरह से अपना जीवन यापन करते हैं। लेकिन सत्ता और विशेषाधिकार का यह पूरा समाजशास्त्र अपने निचले स्तर के लिए उल्लेखनीय है।

सूची में सबसे नीचे वाले लोग अशुद्ध हैं, उदाहरण के लिए कोढ़ी, पतित। अमीर आदमी के घर के बाहर गरीब आदमी, लाजर के बारे में सोचो। मुझे पता है कि यह एक दृष्टांत है, लेकिन यीशु जीवन की मौजूदा परिस्थितियों का उल्लेख कर रहे हैं।

कुछ खाने के लिए भीख मांगना, कुछ रोटी जो अमीर आदमी की मेज से गिर गई। संभवतः यह नैपकिन के रूप में इस्तेमाल की जाने वाली रोटी के टुकड़ों का संदर्भ है और फिर कुत्तों के लिए जमीन पर फेंक दिया जाता है। भूख से तड़पता, बीमार लाजरस उसमें से कुछ खाना चाहता था, लेकिन उसके बारे में सोचा भी नहीं गया था।

तो, शासक, शासक वर्ग, उसके नीचे, पुजारी और व्यापारी, कारीगर और किसान हैं जो इस शक्ति और विशेषाधिकार चार्ट के बीच में एक बड़ा हिस्सा कवर करते हैं, अगर आप चाहें तो। सबसे नीचे, सबसे नीचे, गंदे और पतित, और सबसे नीचे वे लोग हैं जिनकी कोई परवाह नहीं करता। अगर वे मर जाते हैं, तो बस। हम उनके बिना बेहतर हैं। वे खर्च करने योग्य हैं।

अब, उल्लेखनीय बात यह है कि यीशु शक्ति और प्रतिष्ठा के इस सातत्य में लोगों की सेवा करते हैं जैसा कि हम देखेंगे। मैं लूका के सुसमाचार के उद्देश्य और धर्मशास्त्र के बारे में जोएल ग्रीन की शिक्षा को साझा करना चाहता हूँ। 1995 में, उन्होंने एक पुस्तक लिखी, द थियोलॉजी ऑफ़ द गॉस्पेल ऑफ़ लूका, और यहाँ वे उस पर आगे बढ़ते हैं।

लूका का धर्मशास्त्र, बेशक, कथात्मक धर्मशास्त्र है। वह यीशु की कहानी बताता है। उसे इतिहास की चिंता है, और उसका इतिहास सटीक है, लेकिन उसका इतिहास धार्मिक इतिहास है, जो एक बात को स्पष्ट करने के लिए बनाया गया है, एक व्यक्ति और उसकी रुचि और उसके मिशन और उसके जीवन में लक्ष्यों और उद्देश्य को प्रस्तुत करने के लिए बनाया गया है।

लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम की कथात्मक एकता सभी को उद्धार दिलाने के लिए ईश्वर के उद्देश्य की केंद्रीयता को उजागर करती है, और यहाँ हमारे पास फिर से वही चीजें हैं

जिनके बारे में हमने समाजशास्त्र के साथ पहले बात की थी। अमीर, गरीब, विभिन्न नस्लों के लोग, विभिन्न जातीयता के लोग, जीवन में विभिन्न सामाजिक स्तरों के लोग। पहली सदी के भूमध्यसागरीय क्षेत्र की विवादित दुनिया में, खासकर बड़े यहूदी दुनिया में, यह देखना मुश्किल नहीं है कि ईश्वर के उद्देश्य की यह समझ और ईसाई आंदोलन में इसका मूर्त रूप विवाद और अनिश्चितता का स्रोत कैसे रहा होगा।

इस पृष्ठभूमि के विरुद्ध, हम देखते हैं कि लूका-प्रेरितों का उद्देश्य विरोध के सामने ईसाई आंदोलन को मजबूत करना रहा होगा, उन्हें ईश्वर के उद्धारक उद्देश्य और वफ़ादारी की उनकी व्याख्या और अनुभव में सुनिश्चित करके, नंबर एक, और दो, उन्हें ईश्वर की उद्धारक परियोजना में निरंतर वफ़ादारी और गवाही के लिए बुलाकर, बहुत कुछ डैरेल बॉक की शिक्षा की तरह। तब लूका-प्रेरितों का उद्देश्य मुख्य रूप से चर्च संबंधी होगा, जो ईश्वर के लोगों के समुदाय को वैध बनाने के लिए परिभाषित करने वाली प्रथाओं और मानदंडों से संबंधित होगा और ईश्वर की परियोजना में भाग लेने के निमंत्रण पर केंद्रित होगा। लूका-प्रेरितों के उद्देश्य के बारे में हमारी समझ को इसके प्राथमिक धार्मिक महत्वों को ध्यान में रखना चाहिए।

हाल ही में विद्वानों ने बार-बार मोक्ष को लूका-प्रेरितों के काम का मुख्य विषय बताया है। डैरेल बॉक इस बात से सहमत हैं। हॉवर्ड मार्शल भी इस बात से सहमत हैं।

मोक्ष के इस विषय को इस रूप में समझा जा रहा है कि यह कथा के भीतर अन्य पाठ्य तत्वों को एकीकृत करता है। मोक्ष के विषय को समझने और यह दिखाने के लिए कि यह किस हद तक चर्च को मजबूत करने के समग्र उद्देश्य में एकीकृत है, अब हम लूका की कुछ प्रमुख धार्मिक चिंताओं को रेखांकित करते हैं। तीसरे सुसमाचार के कई पहले के अध्ययनों में पूरी तरह से समझ में नहीं आने वाली एक हद तक, लूका की कथा सार और फोकस में धार्मिक है।

यानी, यह स्वयं ईश्वर पर केंद्रित है। इसका मतलब यह नहीं है कि ईश्वर अक्सर कथा में एक पात्र के रूप में प्रकट होता है। स्पष्ट रूप से, ऐसा नहीं है।

बल्कि, यह इस बात पर जोर देना है कि कथा की प्रगति को निर्देशित करने वाला डिज़ाइन, उद्देश्य की पूर्ति या मुकाबला, ईश्वर का उद्देश्य, ईश्वर की योजना है। यदि उद्धार ल्यूक का केंद्रीय विषय है, तो यह आकस्मिक नहीं है कि सुसमाचार में ईश्वर के शुरुआती संदर्भों में से एक में, मैरी ने उसे अपने मैग्निफिकैट, ल्यूक 1-47 में ईश्वर मेरे उद्धारकर्ता के रूप में संबोधित किया। वह ईश्वर, मेरे उद्धारकर्ता की प्रशंसा करती है।

विशेष रूप से सुसमाचार के केंद्रीय भाग में, जो गलील से यरूशलेम तक की घुमावदार यात्रा से संबंधित है, यीशु अपने अनुयायियों द्वारा रखे गए परमेश्वर के दृष्टिकोण को फिर से बनाने का प्रयास करता है ताकि वे परमेश्वर को अपने पिता के रूप में पहचान सकें, जिसकी इच्छा उन्हें अपनी दयालु कृपा से गले लगाने की है। लूका 1:13. लूका 12:32.
क्षमा करें, लूका 11:13. लूका 12:32. लूका 11:13 प्रभु की प्रार्थना है।

हे पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए, तेरा राज्य आए। हमें प्रतिदिन की रोटी दो और हमारे पापों को क्षमा करो जैसे हम स्वयं उन सभी को क्षमा करते हैं जो हमारे प्रति ऋणी हैं और हमें प्रलोभन में नहीं डालते। यदि तुम, उसके एक छोटे से दृष्टांत के कहने के बाद, लूका 11:13, यदि तुम जो बुरे हो, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा? लूका 12:32.

हे छोटे झुण्ड, मत डरो, क्योंकि तुम्हारे पिता को तुम्हें राज्य देने में बड़ी प्रसन्नता हुई है। दैवीय उद्देश्य या परिप्रेक्ष्य कभी-कभी सीधे कथा में कार्य करता है। उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर यीशु के बपतिस्मा के समय उससे बात करता है।

यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यंत प्रसन्न हूं। हालाँकि, अधिक विशिष्ट वह तरीका है जिससे दिव्य उद्देश्य को उपलब्ध कराया जाता है और स्वर्गीय दूतों के माध्यम से धर्मग्रंथों के संदर्भ में भगवान के डिजाइन को व्यक्त करने वाले शब्दों के समूह के माध्यम से व्याख्या की जाती है। उदाहरण के लिए, उद्देश्य.

यह निर्धारित करना आवश्यक है, इत्यादि। और घटनाओं की दिव्य कोरियोग्राफी के उदाहरणों के माध्यम से। ईश्वरीय योजना की प्राप्ति के पीछे पवित्र आत्मा है, वह शक्ति जो ईश्वर की इच्छा को क्रियान्वित करती है।

दैवीय उद्देश्य पर ल्यूक का जोर उनके चर्च संबंधी और व्याख्यात्मक हितों की पूर्ति करता है क्योंकि ईसाई समुदाय अपनी पहचान के साथ संघर्ष करता है, कम से कम उन लोगों के खिलाफ नहीं जो धर्मग्रंथ भी पढ़ते हैं, लेकिन मसीह में विश्वास से इनकार करते हैं। ईश्वर के प्राचीन एजेंडे और यीशु के मंत्रालय के बीच सामंजस्य महत्वपूर्ण हो जाता है।

वास्तव में, यहूदी नेतृत्व और यहूदी संस्थाओं के साथ यीशु का संघर्ष अनिवार्य रूप से व्याख्यात्मक है। परमेश्वर के उद्देश्य को कौन समझता है? कौन शास्त्रों की सही व्याख्या करता है? या, इसे और अधिक स्पष्ट रूप से कहें तो, किसकी व्याख्या में ईश्वरीय स्वीकृति है? किसे ईश्वरीय वैधता प्राप्त है? लूका के लिए, उत्तर सरल है। यीशु का आगमन प्राचीन वाचा में गहराई से निहित है, और उसका मिशन पूरी तरह से परमेश्वर के इरादे के अनुरूप है।

यह सब से ऊपर उनके जीवन के शास्त्र पैटर्न और उनके पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण में उनके ऊपर घोषित दिव्य औचित्य द्वारा दिखाया गया है। लूका के अनुसार ईश्वर कहानी के एजेंडे को नियंत्रित कर सकता है, लेकिन ईश्वर के पहले खंड में मुख्य पात्र, निश्चित रूप से, यीशु है। कथा के पात्रों की तुलना में, लूका के अपने पाठक शुरुआत से ही ईश्वर की मुक्ति योजना में यीशु की पहचान और भूमिका को समझने की अपनी क्षमता में भाग्यशाली हैं।

यीशु को एक पैगम्बर के रूप में लेकिन एक पैगम्बर से भी बढ़कर चित्रित किया गया है। वह लंबे समय से प्रतीक्षित डेविडिक मसीहा, ईश्वर का पुत्र है, जो अपने करियर में एक शाही भविष्यवक्ता, एक शाही भविष्यवक्ता के भाग्य को पूरा करता है, जिसके लिए मृत्यु, हालांकि आवश्यक है, शायद ही अंतिम शब्द है। यीशु के शिष्यों के लिए, संघर्ष यह समझने का नहीं है कि यीशु कौन हैं, बल्कि यह है कि वह अपनी भूमिका कैसे निभा सकते हैं।

दुनिया के बारे में उनके अपने विचार पूरे सुसमाचार में पारंपरिक बने हुए हैं। इसलिए, यद्यपि सुसमाचार के लगभग अंत तक, उनके पास ईश्वर के मसीहा के रूप में यीशु की उत्कृष्ट स्थिति को उसकी जघन्य पीड़ा की संभावना और अनुभव के साथ सहसंबंधित करने की क्षमता नहीं है। प्रारंभ में, यीशु की पहचान उद्धारकर्ता के रूप में की गई है, 2:11। स्वर्गदूत ने चरवाहों से कहा, देखो, आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, अर्थात् मसीह प्रभु।

यह वह भूमिका है जिसे वह कई तरीकों से पूरा करता है। सबसे ज्यादा दिखाई देने वाले चमत्कारों में से हैं उनके उपचार के चमत्कार और उनकी मेज़ पर संगति की व्यापक प्रकृति। तीसरा प्रचारक दोनों पर प्रकाश डालता है, जिनके लिए ऐसे अभ्यास ईश्वर के आने वाले राज्य की सच्चाई को मूर्त रूप देते हैं।

यीशु ने भोजन की मेज़ पर लोगों के साथ बातचीत की और अपने उपचार के कार्य में, उन लोगों के लिए दिव्य उद्धार की उपस्थिति का संचार किया जिनकी स्थिति समाज में आम तौर पर हाशिये पर है। अर्थात्, यह गरीबों के लिए अच्छी खबर है, 4, अध्याय 4, 18 और 19। यह बहुत महत्वपूर्ण है जहाँ यीशु यशायाह 61, लूका 4:16 को उद्धृत करते हैं।

वह नासरत आया, जहाँ वह पला-बढ़ा था। और जैसा उसका रिवाज था, वह सब्त के दिन आराधनालय में गया और पढ़ने के लिए खड़ा हुआ। और उसे भविष्यद्वक्ता यशायाह की पुस्तक दी गई।

उसने पुस्तक खोली और वह स्थान पाया जहाँ यह लिखा था। प्रभु की आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने गरीबों को खुशखबरी सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे बंदियों को आज़ादी और अंधों को दृष्टि पाने का प्रचार करने, उत्पीड़ितों को आज़ाद करने और प्रभु के अनुग्रह के वर्ष का प्रचार करने के लिए भेजा है।

उसने पुस्तक को लपेटकर सेवक को वापस दे दिया और बैठ गया। और सारे आराधनालय की आंखें उस पर टिकी रहीं। और वह उन से कहने लगा, आज यह वचन तुम्हारे सुनने में पूरा हुआ।

बहुत खूब। उन्होंने पहले कभी किसी को ऐसा कहते नहीं सुना। झूठे मसीहा ऐसा कह सकते हैं, लेकिन हम उनके बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

बहुत खूब। ऐसे व्यवहार यीशु के शब्दों से मेल खाते हैं। वह सिर्फ खड़े होकर यह नहीं कहता कि वह गरीबों के लिए अच्छी खबर लाने जा रहा है।

वह ऐसा करता है। और यीशु की शिक्षा तीसरे सुसमाचार के प्रमुख भागों में व्याप्त है, विशेष रूप से सुसमाचार के मध्य भाग में जो यरूशलेम की उनकी यात्रा को समर्पित है। उनके निर्देश के बारे में जो बात अक्सर ध्यान खींचने वाली होती है, वह है इसका उन्मुखीकरण, केवल उचित व्यवहार के प्रति नहीं, बल्कि ईश्वर के एक पुनर्निर्मित दर्शन और उस तरह की विश्व व्यवस्था की ओर जो ईश्वर के इस दर्शन को प्रतिबिंबित कर सकती है।

इसे अलग ढंग से कहें तो, यीशु, ईश्वर के पुत्र के रूप में, ईश्वर के प्रतिनिधि हैं, जिनके जीवन की विशेषता ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता है और जो दूसरों के लिए व्याख्या करते हैं, यदि वे केवल सुनेंगे, ईश्वर की प्रकृति और योजना और ईश्वर के प्रति उचित प्रतिक्रिया की रूपरेखा। ल्यूक के लिए, फिर, शिष्यत्व का आह्वान मूल रूप से व्यक्तियों के लिए खुद को यीशु के साथ और इस प्रकार, भगवान के साथ संरेखित करने का निमंत्रण है। इसका मतलब यह है कि भगवान के लोगों के बीच सदस्यता के लिए, विरासत में मिली स्थिति के मुद्दों से ध्यान हटा दिया जाता है, और उन लोगों पर एक प्रीमियम रखा जाता है जिनके व्यवहार से दयालु भगवान के प्रति उनके असीम आलिंगन का पता चलता है।

अब्राहम की सच्ची संतान वे हैं जो अपने जीवन में ईश्वर की कृपा को अपनाते हैं और दूसरों के प्रति उदारता से दया दिखाते हैं, खास तौर पर ज़रूरतमंदों के प्रति। इस प्रकार यीशु लोगों से आह्वान करते हैं कि वे वैसा ही जीवन जिएँ जैसा वे जीते हैं, जो कि बड़े रोमन संसार में सम्मान और हैसियत की पारंपरिक धारणाओं द्वारा चिह्नित संघर्षपूर्ण, प्रतिस्पर्धी जीवन शैली के विपरीत है। ईश्वर के राज्य में सेवा से विकसित होने वाले व्यवहार एक अलग मोड़ लेते हैं।

अपने शत्रुओं से प्रेम करो, उन लोगों का भला करो जो तुमसे घृणा करते हैं, उन लोगों का आतिथ्य सत्कार करो जो तुम्हें प्रत्युत्तर नहीं दे सकते, और बदले की आशा किए बिना दान करो। ऐसी प्रथाएँ केवल उन लोगों के लिए संभव हैं जिनके स्वभाव, दृढ़ विश्वास और प्रतिबद्धताओं को ईश्वर की अच्छाई के साथ परिवर्तनकारी मुठभेड़ों द्वारा नया आकार दिया गया है। तीसरे सुसमाचार के भीतर, इस फोकस के लिए मुख्य प्रतियोगी पैसे से उपजा है, इतना पैसा ही नहीं, बल्कि पैसे का नियम सामाजिक प्रशंसा के लिए ड्राइव में प्रकट होता है और इसलिए जीवन के उन रूपों में जो शक्ति और विशेषाधिकार प्राप्त लोगों को उन लोगों से अलग रखने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। निम्न स्तर का, सबसे छोटा, खोया हुआ और छोड़ दिया गया।

ग्रीन ने यहां वास्तव में कुछ महत्वपूर्ण विचारों का उल्लेख किया है, और मैं शक्ति और स्थिति और जीवन के इस प्रतिस्पर्धी रूप के बारे में उनके विचारों को उठाते हुए एक संक्षिप्त भ्रमण करना चाहता हूँ। इस पूरे संबंध में आज जो नाम सबसे उल्लेखनीय है वह जॉन बार्कले का है जिसने पहली शताब्दी के ग्रीको-रोमन संदर्भ में ईश्वर की कृपा के बारे में हमारी समझ को बदल दिया है। मूलतः, ग्रीको-रोमन सन्दर्भ में ईश्वर की कोई कृपा नहीं थी।

मैं इस बात से इनकार नहीं कर रहा हूँ कि भगवान के लोगों ने भगवान की कृपा को समझा। मैं इस बात से इनकार कर रहा हूँ कि जीवन और विश्वदृष्टि पर ग्रीको-रोमन परिप्रेक्ष्य में ईश्वर की कृपा की कोई धारणा थी। संपूर्ण सामाजिक संरचना रिश्तों का एक जाल थी जिसमें संरक्षक शामिल थे, जिनके पास अपने ग्राहकों की तुलना में प्रतिष्ठा से अधिक शक्ति थी।

जीवन के जटिल जाल में संरक्षक-ग्राहक संबंध संरचित थे, पूरे ग्रीको-रोमन समाज में। संरक्षक स्वतंत्र रूप से नहीं देते थे। वे देते थे, और दूसरों की मदद करते थे, लेकिन बहुत दायित्व के साथ, मांग को समझते थे, और यही सही शब्द है। ग्राहक से अपेक्षा की जाती थी कि वह संरक्षक के प्रति वफ़ादार रहे और उसे वापस भुगतान करे, विशेष रूप से निवेश पर वापसी के साथ नहीं

बल्कि अन्य तरीकों से संरक्षक की महिमा और सम्मान और इच्छाओं और अभिलाषाओं और योजनाओं और उद्देश्यों में योगदान दे।

उदाहरण के लिए, बदले में, ग्राहकों को लाभ मिला, लेकिन एक बार फिर, यह बिना किसी शर्त के नहीं था। हर जगह शर्तें थीं। पारस्परिक दायित्व पूरे समाज पर हावी थे, और इसलिए जब यीशु ने कहा कि अपने दुश्मनों से प्यार करो और जो तुमसे नफरत करते हैं उनके साथ अच्छा करो, या अगर उन्होंने अपने दृष्टांतों में कहा कि गरीबों को दावत पर आमंत्रित करो, तो यह इतना अविश्वसनीय रूप से सांस्कृतिक विरोधी है कि हम इसे शायद ही व्यक्त कर सकें।

उन लोगों का आतिथ्य सत्कार करें जो प्रतिदान नहीं कर सकते। यदि मैं उस शब्द का उपयोग उनके विश्वदृष्टिकोण में कर सकता हूँ तो यह मौलिक रूप से विधर्मी है। बार्कले दिखाता है कि दायित्व के बिना देने जैसी कोई चीज़ नहीं है।

हर उपहार मुफ्त उपहार नहीं है . यह एक उपहार है जो प्राप्तकर्ता की ओर से दायित्व की मांग करता है, और बदले में, ग्राहक अन्य ग्राहकों के संरक्षक हो सकते हैं, और यह रिश्तों के एक जटिल जाल में बदल जाता है। इसके बीच में, यीशु आते हैं और न केवल दीन लोगों की सेवा करते हैं, बल्कि चाहे वह उच्च हो, मध्यम हो, या नीच हो, वह स्वतंत्र रूप से देते हैं, और वह सिखाते हैं कि वह वैसे ही देते हैं जैसे भगवान देते हैं। जिसे वह अपना पिता कहता है, वह वैसा ही करता है, और यह पहली शताब्दी के ग्रीको-रोमन दुनिया में इतना क्रांतिकारी है कि इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए और यह एक अद्भुत बात है कि क्या अनुग्रह शब्द का भी हमेशा उपयोग किया जाता है या नहीं, ईश्वर की कृपा की अवधारणा यीशु के व्यक्तित्व और चरित्र और मंत्रालय में व्याप्त है।

ओह, मैं इस बात से इनकार नहीं कर रहा हूँ कि वह पवित्र और न्यायी था और उसने अन्य गुण प्रदर्शित किए, लेकिन यदि उद्धार लूका के सुसमाचार का मुख्य उद्देश्य है और उस उद्धार का प्रचार प्रेरितों के काम की पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है, तो परमेश्वर का अनुग्रह सर्वोपरि है, यह सर्वव्यापी है, और यह न केवल सभी सामाजिक स्तरों और जीवन की सभी स्थितियों और दोनों लिंगों आदि के असंरक्षित लोगों को बाहरी रूप से प्रचारित किया जाने वाला संदेश है, बल्कि यह परमेश्वर के नए लोगों, परमेश्वर के लोगों के नए वाचा समुदाय के भीतर संबंधों को भी चिकना करना चाहिए। जॉन बार्कले का काम मैं उनके द्वारा लिखी गई हर चीज़ या उनके सभी निष्कर्षों की अनुशंसा नहीं करता हूँ, मैं बस इतना कह रहा हूँ कि उन्होंने यह पता लगाने में बहुत रुचि जगाई है कि उस रोमन ग्रीको-रोमन दुनिया में यीशु मसीह में परमेश्वर का अनुग्रह कितना अनोखा है। यीशु के शिष्य डैरेल बॉक्सक के माफ़ करें, जोएल ग्रीन के लूका के सुसमाचार पर विद्वत्पूर्ण और सुसमाचार संबंधी टिप्पणी पर लौटने में पूरी तरह सफल नहीं हुए हैं।

यीशु के शिष्य इस प्रकृति और परिमाण की निष्ठा को मूर्त रूप देने में पूरी तरह सफल नहीं हैं। वे कैसे हो सकते हैं? यह कथा में अन्य लोगों के बारे में ल्यूक की गवाही को और भी अधिक प्रभावशाली बनाता है, जो ईश्वर के उद्देश्य में अप्रत्याशित अंतर्दृष्टि प्रकट करते हैं और अनुकरणीय तरीकों से यीशु के संदेश का जवाब देते हैं। वह जो कह रहा है वह यह है कि शिष्यों

को हमेशा संदेश नहीं मिलता है, और इसलिए ल्यूक दूसरों को लाता है, ग्रीन उन्हें कोई नहीं कहता है जो कथा में कुछ बिंदुओं पर शिष्यों से बेहतर काम करते हैं।

शहर की एक पापी महिला अध्याय 7 श्लोक 36 से 50 तक में चर्च पर अपने व्याख्यान में निपटूंगा जो हमारे अगले सत्र में होना चाहिए। एक धनी टोल संग्राहक कर संग्राहक जक्कईस। तीन का उल्लेख करने के लिए एक क्रूस पर चढ़ाया गया अपराधी, पश्चाताप करने वाला चोर।

ये लोग कोई नहीं हैं। ये फरीसी इस बात पर विश्वास नहीं कर पाए कि यीशु इस अनैतिक, अपने मन में बेकार औरत को छूने दे रहा था। ओह, यह घृणित है।

यदि वह भविष्यवक्ता होता, तो वह ऐसा नहीं होने देता, और जक्कई को तुच्छ समझा जाता था। वह न केवल कर वसूलने वाला था, बल्कि एक प्रधान कर वसूलने वाला भी था। हम ठीक से नहीं जानते कि इसका क्या मतलब है, लेकिन वह शायद दूसरों से भी बदतर था और इतना अमीर था कि जब राज्य का संदेश उसके दिल में उतरा, तो उसने कृतज्ञता और अनुग्रह की भावना से परमेश्वर और उन लोगों के प्रति, जिन्हें उसने अतीत में धोखा दिया था और क्रूस पर मरने वाले अपराधी के प्रति कानून की अपेक्षा से अधिक दान दिया।

तो, ल्यूक के पास हास्य की भावना है, हम निश्चित रूप से अप्रत्याशित रूप से प्रदर्शित करने में एक विडंबनापूर्ण भावना कह सकते हैं, जैसा कि शिष्य संघर्ष करते हैं, कभी-कभी ये कोई भी भगवान के उद्देश्यों और तरीकों को समझने में उनसे बेहतर काम नहीं करते हैं। अपने हिस्से के लिए, शिष्यों ने पाया कि यीशु का अनुसरण करने का अर्थ ज्यादातर यीशु के साथ रहना, उनसे सीखना, और उनके मंत्रालय की सेवा, प्रचार और प्रत्याशा के अनुसार नए सिरे से सामाजिककरण करना है, यह सब गवाह के रूप में उनकी भूमिका की तैयारी में है। प्रेरितों के कार्य। यदि शिष्य विश्वासयोग्यता को अपनाने के लिए संघर्ष करते हैं जैसा कि यीशु द्वारा परिभाषित और प्रतिरूपित किया गया है, तो अन्य इसके विपरीत प्रयास करते हैं।

यीशु के प्रति शत्रुता रखने वाले लोग दैवीय एजेंडे की गणना बिल्कुल अलग ढंग से करते हैं और उनके मंत्रालय को अपने नेतृत्व की स्थिति और उन संस्थानों के लिए खतरे के रूप में देखते हैं जो चीजों के वर्तमान क्रम को बनाए रखते हैं। संक्षेप में, वे यीशु को स्वयं ईश्वर का विरोध करने वाले के रूप में देखते हैं। निःसंदेह, जैसा कि वे ईश्वर को समझते हैं, ईश्वर है, और इस प्रकार किसी भी कीमत पर उसका विरोध किया जाना चाहिए।

शैतान स्वयं एक दैवीय उद्देश्य का विरोध करता है, और ल्यूकन के दृष्टिकोण से, शैतान के उद्देश्यों को शैतानी ताकतों द्वारा पूरा किया जाता है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं और यरूशलेम में यहूदी नेतृत्व सहित अन्य लोगों द्वारा, जो भगवान का विरोध करते हैं। शत्रुता की नदी चौड़ी और चौड़ी होती जाती है, अंततः यीशु के जुनून पर अपने किनारों को बहा ले जाती है जिसके परिणामस्वरूप उनकी अंतिम अस्वीकृति, क्रूस पर चढ़ाई और मृत्यु होती है। शत्रुता का रूप ल्यूक की कथा को तीव्र रहस्य के साथ आगे बढ़ाता है, लेकिन यह दिखाने के लिए भी नियोजित किया जाता है कि ईश्वर के उद्देश्य को किस प्रतिष्ठित तरीके से साकार किया जा सकता

है, विरोध को अपने स्वयं के उद्देश्यों के विरुद्ध कर दिया जाता है ताकि ईश्वरीय योजना को पूरा किया जा सके।

लुकान कथा के दौरान, यह एक व्यापक समन्वयकारी विषय पर ध्यान केंद्रित करता है जैसा कि बाख ने हमें दिखाया है जैसा कि हॉवर्ड मार्शल ने दिखाया होता अगर हमारे पास उनके उह ल्यूक इतिहासकार और धर्मशास्त्री को देखने का समय होता और जैसा कि बाख अब व्यापक समन्वयकारी विषय मोक्ष पर जोर देते हैं। मोक्ष न तो केवल एक सिद्धांत है और न ही केवल एक भविष्य है, बल्कि वर्तमान में जीवन को गले लगाता है, मानव जीवन की अखंडता को बहाल करता है, मानव समुदायों को पुनर्जीवित करता है, ब्रह्मांड को व्यवस्थित करता है, और ईश्वर के लोगों के समुदाय को ईश्वर की कृपा को अपने बीच और दूसरों के लगातार बढ़ते दायरे में लाने के लिए कमीशन देता है। तीसरे प्रचारक को ऐसे द्वंद्वों के बारे में कुछ भी नहीं पता है जो कभी-कभी सामाजिक और आध्यात्मिक या व्यक्तिगत और सामुदायिक के बीच खींचे जाते हैं।

मुक्ति सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चिंताओं सहित, सन्निहित जीवन की समग्रता को समाहित करती है। ल्यूक के लिए, इज़राइल का ईश्वर महान परोपकारी है जिसका मुक्ति उद्देश्य यीशु के करियर में प्रकट होता है, जिसका संदेश यह है कि यह उपकार दुनिया में जीवन जीने के नए तरीकों को सक्षम और प्रेरित करता है। हमारे अगले व्याख्यान में मैं भगवान के लोगों, ल्यूक के सुसमाचार में चर्च के संबंध में अपने कुछ अध्ययनों को साझा करूंगा।

यह ल्यूक एक्ट्स के धर्मशास्त्र पर अपने शिक्षण में डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन हैं। यह सत्र संख्या सात है, जोएल ग्रीन, प्रयोजन धर्मशास्त्र।